भारत में बच्चों की इंजरी को लेकर ये जगायेंगे जागरूकता, एमओयू हुआ साइन

Updated: 2018-05-18 18:34:40 IST

भारत में बच्चों की इंजरी को लेकर जागरूकता जगाने के लिए इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलॉजी, एकेडमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स और इंडो यूएस इमरजेंसी कोलैबरेशन के बीच एक एमओयू साइन हुआ है।

लखनऊ। भारत में कुल बच्चों की जनसंख्या के 25 से 30 प्रतिशत बच्चे हर वर्ष किसी न किसी इंजरी का शिकार होते हैं। क्योंकि भारत में बच्चों की इंजरी को लेकर एमबीबीएस में कोई अलग से पाठ्यक्रम नहीं है और न ही ऐसा कोई कोर्स कराया जाता है जिससे बच्चों की इंजरी के बारे में विस्तार से बताया जाय। ऐसे में जागरूकता और ज्ञान की कमी के कारण बच्चों को सही उपचार नहीं मिल पाता जिससे हर वर्ष सैकड़ों बच्चों की मौत हो जाती है। क्योंकि बच्चों की शारीरिक बनावट बिलकुल अलग होती है इसलिए इनकी इंजरी होने पर इलाज के तरीके भी अलग है।

भारत में बच्चों की इंजरी को लेकर जागरूकता जगाने के लिए इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलॉजी, एकेडमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स और इंडो यूएस इमरजेंसी कोलैबरेशन के बीच एक एमओयू साइन हुआ है। जिसमें ये सोसाइटी बच्चों की इंजरी को लेकर पूरे भारत के मेडिकल कॉलेजों, चिकित्सा संस्थानों में डाक्टरों को ट्रेनिंग के साथ जागरूकता जगाने का काम करेंगी।

इसके अलावा भारत में पीडियाट्रिक का विकास करने में मदद करेंगी। इसके तहत पीडियाट्रिक सर्जरी, पीडियाट्रिक ऑर्थोपेडिक्स, पीडियाट्रिक न्यूरोसर्जरी और पीडियाट्रिक इमरजेंसी मेडिसिन विषयों को लेकर ट्रेनिंग दी जायेगी।

एमओयू हुआ साइन

बच्चों की जागरूकता जगाने के लिए इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक्स एवं इंजरी के निदेशक प्रो. डीके गुप्ता जो वर्तमान में एम्स दिल्ली में पीडियाट्रिक विभाग के हेड और केजीएमयू के पूर्व कुलपति हैं, इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलॉजी के अध्यक्ष डॉ. अजय सिंह जो वर्तमान में केजीएमयू के ऑर्थोपेडिक विभाग में प्रोफेसर हैं और एकेडमी कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स इन इंडिया के कोषाध्यक्ष डॉ. संजीव भोई के बीच एक एमओयू साइन हुआ है।

इस बारे में इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलॉजी और केजीएमयू के आर्थोपेडिक विभाग के डॉ. अजय सिंह ने बताया कि आकस्मिक कक्ष में रोगी बच्चे की इंजरी के दौरान होने वाली सर्जरी को बेहतर बनाने के ये एमओयू साइन किया

बच्चों की इंजरी रोकने के लिए ACE-ISPT ने मिलाया हाथ, मिलेगी कवर सिक्युरिटी

dainikbhaskar.com May 18, 2016, 20:53 PM IST

COMMENTS 0

1 of 1

लखनऊ.सड़क दुर्घटनाओं में बच्चों को होने वाली इंजरी से बच्चों को कवर सुरक्षा देने के लिए एकेडमिक कॉलेज ऑफ इमर्जेंसी (ACE) और इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियॉट्रिक ट्रामेलोजी (ISPT) अब एक मंच पर आ गए हैं। दोनों ने मिलकर इमर्जेंसी सर्जिकल पीडियॉट्रिक्स एंड इन्जूरी इनिशियेटिव इन इंडिया (ESPI-INDIA) नाम से नया फोरम तैयार किया है। यह फोरम इमर्जेंसी पीडियॉट्रिक्स एंड इंजरी की पहल पर बना है। ईएसपीआई-इंडिया बच्चों की शल्य चिकित्सा को लेकर एक्यूट केयर सर्जिकल पीडियॉट्रिक्स को बढ़ाने की दिशा में अपना योगदान देगा।

यह है पूरा मामला

आईएसपीटी के अध्यक्ष व किंग जार्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी के ट्रामा सेंटर के कोआर्डिनेटर डॉ. अजय सिंह के मुताबिक भारत में कुल बच्चों की जनसंख्या के 25 से 30 फीसदी बच्चे हर साल किसी न किसी इंजरी का शिकार होते हैं। भारत में बच्चों की इंजरी को लेकर एमबीबीएस में कोई अलग से पाठ्यक्रम नहीं है और न ही ऐसा कोई कोर्स कराया जाता है, जिसमें बच्चों की इंजरी के बारे में विस्तार से बताया जाए।

जागरूकता के अभाव में नहीं हो पाता सही उपचार

जागरूकता के अभाव में सही उपचार न मिल पाने से हर साल सैकड़ों बच्चों की मौत हो जाती है। उन्होंने बताया कि बच्चों की शारीरिक बनावट बिल्कुल अलग होती है इसलिए इनकी इंजरी होने पर इलाज के तरीके भी अलग हैं। उन्होंने बताया कि ईएसपीआई-इंडिया देश में स्थापित मेडिकल कालेजों सहित सभी चिकित्सा संस्थानों के फैकल्टी मेम्बर व डाक्टर्स को ट्रेनिंग देगा। इसके अलावा पीडियॉट्रिक्स के तहत आने वाली विभिन्न यूनिट जैसे पीडियॉट्रिक सर्जरी, पीडियॉट्रिक ऑर्थोपेडिक्स, पीडियॉट्रिक न्यूरोसर्जरी और पीडियॉट्रिक इमर्जेंसी मेडिसिन के सलेबस में भी सुधार किया जाएगा। एसीई व आईएसपीटी के बीच यह एमओयू एसीपीआई के [illegible] स्टर डॉ. डीके गुप्ता के निर्देशन में किया गया है। डॉ. डीके गुप्ता केजीएमयू के कुलपति भी रह चुके हैं।

एमओयू का यह है उद्देश्य

एकेडमिक ट्रांसलेशनल इनोवेशन, सामुदायिक कौशल विकास (जन स्वास्थ्य), चिकित्सा कौशल विकास एवं प्रशिक्षण, स्वास्थ्य

THE AMPLE NEWS
Leading Hindi News Portal

दुर्घटनाग्रस्त बच्चों को इमरजेंसी में मिलेगा विशेष इलाज

Posted By: Admin on: May 18, 2016 In: Medical News No Comments

लखनऊ। दुर्घटना ग्रस्त बच्चों को, वयस्कों से अलग इलाज की जरूरत होती है। जबकि इमरजेंसी में दुर्घटना ग्रस्त मरीजों का एक ही प्रकार से इलाज किया जाता है। इलाज में तकनीकी खामियों के कारण बच्चा मर जाता है हैं और मरने की वजह दूसरी बताई जाती हैं। यह जानकारी इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक राष्ट्रीय कार्यक्रम संचालन को लेकर एम्स के साथ अनुबन्ध करते हुए केजीएमयू के हड्डी रोग विशेषज्ञ प्रो.अजय सिंह ने दी।

इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक विषयक कार्यक्रम संचालन का अनुबन्ध, एम्स में पीडियाट्रिक सर्जरी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो.डीके गुप्ता, अकादमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स इन इंडिया के कोषाध्यक्ष डॉ.संजीव भोई और केजीएमयू के प्रो.सिंह के मध्य हुआ। इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रॉमोटोलॉजी के नेशनल प्रेसिडेंट, केजीमएयू के प्रो.सिंह ने बताया कि यह योजना दुर्घटना में घायल बच्चों का, विशिष्ट इलाज उपलब्ध कराकर जीवन रक्षा करने वाला है। इसमें बच्चों के इलाज संबन्धित जानकारी के लिए चिकित्सक, नर्स एवं पैरामेडिकल स्टाफ को ट्रेनिंग दी जाएगी। भविष्य में पीडियाट्रिक सर्जरी, न्यूरो सर्जरी, आर्थोपैडिक एवं इमरजेंसी मेडिसिन सुपर स्पेशलिटी यूनिट शुरू करने की योजना है। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम को एमसीआई और केंद्र सरकार द्वारा अनुमति मिल चुकी है। इसे बड़े शहरों में नहीं बल्कि ग्रामीण क्षेत्र स्थिति प्राथमिक एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों तक चलाना है। आगामी सितम्बर से केजीएमयू के ट्रामा सेंटर में कार्यक्रम शुरू करने की पृष्टभूमि तैयार की गई है। योजना संचालित करने के लिए केन्द्र सरकार एवं नेशनल हेल्थ मिशन नई दिल्ली को, बजट मुहैय्या करने के लिए प्रस्ताव भेज गया है।

गंभीर स्थिति में बच्चों को मिलेगा बेहतर इलाज

जागरण संवाददाता, लखनऊ : ट्रामा यानी दुर्घटना में घायल होने वाले बच्चों का बेहतर उपचार हो सके इसके लिए पहली बार कार्य प्रणाली तैयार की जाएगी। इसके लिए इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक एंड इंजरीज इनीशिएटिव (ईएसपीआइ-इंडिया) की शुरुआत की गई है। इसके अकादमिक निदेशक प्रो. देवेंद्र कुमार गुप्ता होंगे।

किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय (केजीएमयू) व इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलॉजी के अध्यक्ष डॉ. अजय सिंह व अकादमिक कालेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स इन इंडिया के डॉ.संजीव भोई द्वारा एक एमओयू साइन किया गया। डॉ. सिंह ने बताया कि ईएसपीआइ-इंडिया का उद्देश्य पीडियाट्रिक सर्जरी, आर्थोपेडिक्स, न्यूरो सर्जरी व इमरजेंसी का विकास करना है। दरअसल, इमरजेंसी में जब बच्चे आते है तो उनके इलाज की अलग से कोई प्रणाली विकसित नही है। इसके माध्यम से इमरजेंसी में काम करने वाले प्राथमिक चिकित्सकों को प्रशिक्षित किया जाएगा। इसके लिए कार्यशालाएं आयोजित की जाएंगी व सतत चिकित्सा कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

बच्चों

जागरण संवाददाता, इस भीषण गर्मी में लू हो सकता है। बच्चे खिलाड़ी व यात्रा कर से अधिक पीड़ित हो बचाव करके इसके सकता है। विशेषज्ञों में नमक व पानी प्रभाव पड़ता है। सं न्यूरोलाजिस्ट प्रो.स मस्तिष्क का एक

लू के लक्षण

- सिर का भारी सिरदर्द
- अधिक प्यास एवं शरीर मे भारी साथ थकावट
- जी मचलना, चकराना व शरी तापमान बढ़ना

दुर्घटना ग्रस्त बच्चों को इमरजेंसी में मिलेगा विशेष इलाज

लखनऊ। दुर्घटना ग्रस्त बच्चों को, वयस्कों से पृथक इलाज की जरूरत होती है। जबकि इमरजेंसी में दुर्घटना ग्रस्त मरीजों को एक ही प्रकार से ट्रीट किया जाता है। इलाज में तकनीकी त्रुटियों का आलम है बच्चें मर जाते है और वजह दूसरी बताई जाती है। यह जानकारी बुधवार को इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक राष्ट्रीय कार्यक्रम संचालन को लेकर एम्स के साथ अनुबन्ध करते हुये केजीएमयू के हड्डी रोग विशेषज्ञ प्रो.अजय सिंह ने दी।

कार्यक्रम

सितम्बर से शुरू होगा सर्जिकल पीडियाट्रिक ट्रामा सेंटर में

कार्यक्रम संचालन के लिए नेशनल हेल्थ मिशन से बजट की मांग

इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक एवं इंजरी, के एमओयू साइन करते एम्स के प्रो.डीके गुप्ता, केजीएमयू के प्रो.अजय सिंह एवं इमरजेंसी एक्सपर्ट डॉ.संजीव भोई

इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक विषयक कार्यक्रम संचालन का अनुबन्ध, एम्स में पीडियाट्रिक सर्जरी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो.डीके गुप्ता, अकादमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स इन इंडिया के कोषाध्यक्ष डॉ.संजीव भोई और केजीएमयू के प्रो.सिंह के मध्य हुआ। इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रॉमेटोलॉजी के नेशनल प्रेसीडेंट, केजीमएयू के प्रो.सिंह ने बताया कि यह योजना दुर्घटना में घायल बच्चों का, विशिष्ट इलाज उपलब्ध कराकर जीवन रक्षा करने वाला है। इसमें बच्चों के इलाज संबन्धित जानकारी के लिए चिकित्सक, नर्स एवं पैरामेडिकल स्टाफ को ट्रेनिंग दी जायेगी। भविष्य में पीडियाट्रिक सर्जरी, न्यूरो सर्जरी, आर्थोपेडिक एवं इमरजेंसी मेडिसिन सुपर स्पेशलिटी यूनिट शुरू करने की है। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम को एमसीआई और केन्द्र सरकार द्वारा अनुमति मिल चुकी है। इसे बड़े शहरों में नहीं बल्कि ग्रामीण क्षेत्र स्थिति प्राथमिक एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों तक चलाना है। आगामी सितम्बर से केजीएमयू के ट्रामा सेंटर में कार्यक्रम शुरू करने की पृष्टभूमि तैयार की गई है। योजना संचालित करने के लिए केन्द्र सरकार एवं नेशनल हेल्थ मिशन नई दिल्ली को, बजट मुहैय्या कराने के लिए प्रस्ताव भेजा गया है।

प्रो.अजय सिंह ने बताया कि वयस्कों में 100 एमएल खून बहने पर मरीज का ब्लड प्रेशर (बीपी)गिर जाता है जबकि बच्चों में दो लीटर निकलने पर भी बीपी नहीं कम होता है। जिसकी वजह से इलाज करने वाले चिकित्सक मरीज बच्चे के जीवन के संकट को भांप नहीं पाते है और अधिक खून रिसाव की वजह से बच्चों की मौत हो जाती है।

अमरनाथ यात्रियों को रेल-बस किराए में छूट की मांग

एएनएन

लखनऊ। अमरनाथ यात्रा के श्रद्धालुओं को सरकार की ओर से सुविधा मुहैया कराए जाने की मांग को लेकर सनातन महासभा ने बुधवार को जीपीओ पार्क में प्रदर्शन किया। इस दौरान सभी ने केन्द्र-राज्य सरकार पर हिन्दुओं की आस्था के प्रतीक अमरनाथ यात्रा के प्रति भेदभाव का आरोप लगाया।

महासभा के संयोजक डॉ. प्रवीन ने अमरनाथ यात्रा पर जाने वाले श्रद्धालुओं के लिए रेल व बस के किराये में 50 प्रतिशत छूट व आवास और खाने की व्यवस्था कराए जाने की मांग उठाई। उन्होंने कहा कि यात्रा में जाने वाले लोगों को काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। वहीं एडवोकेट संतोष पाण्डेय ने यात्रा के दौरान मृत श्रद्धालुओं के परिजनों को पांच लाख रुपए मुआवजा दिलाए जाने की बात कही।

20 तक काउंसि

बोर्ड ने संबद्ध

एएनएन

लखनऊ। देशभर के सीबीएसई बोर्ड
विद्यालयों से सेंट्रल बोर्ड ऑफ से
एजुकेशन, सीबीएसई बोर्ड ने उनके यहा
की सुविधा के लिए संचालित होने
गाइडेंस और काउंसिलिंग की सुविधा
संदर्भ में जानकारी मांगी है। बोर्ड क
जानकारी एक तयशुदा प्रश्नोत्तरी आ
फार्मेट में आगामी 20 मई तक स्कूलों क
है। इस संबंध में बोर्ड की ओर से सीब
संबद्ध सभी स्कूलों को पत्र लिखकर जान
ईमेल से भेजने को कहा गया है।

केजीएमयू के प्रास्थोडॉन्टिक्स विभाग और आईएनडीप्राईड के साथ सहमति पत्र पर हुए हस्ताक्षर को दिखाते हुए प्रो. देवेंद्र कुमार गुप्ता, प्रो. प्रजय सिंह, और संजीव मोदी

प्रो. हैदर अब्बास ऐनेस्थेसिया से इमरजेंसी मेडिसिन विभाग में स्थानांतरित

लखनऊ। केजीएमयू में बुधवार को कार्यपरिषद की आकस्मिक बैठक आयोजित की गई। आयोजित बैठक के दौरान प्रो. हैदर अब्बास निश्चेतना विभाग से स्थानांतरित करते हुए अस्थाई तौर पर इमरजेंसी मेडिसिन विभाग की जिम्मेदारी सौंपने के साथ कई अहम मुद्दों पर चर्चा हुई। बैठक में कार्यपरिषद ने चयन समिति के निर्णयों पर चर्चा करते हुए नए विभागों के लिए शिक्षकों की नियुक्ति और मौजूदा लोगों को प्रमोशन दिया, जिसके तहत वैस्क्यूलर सर्जरी विभाग, हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेटिव विभाग, में एक-एक सह आचार्य की तैनाती की गई।

रोडवेज के लिए अनुबंधित ब

संदीप पांडेय

लखनऊ। परिवहन निगम की अनुबंधित बसें काफी फायदा का सौदा बन गयी है। यह उनके लिए सोने का अण्डा देने वाली मुर्गी बन गयी है। निगम की अपनी बसें सारे संसाधनों के साथ भ्रष्टाचार के चलते घाटे पर संचालित हो रही है। वहीं अनुबंधित बसें बीते वर्षों में लगातार निगम की आय बढ़ाने का काम कर रही है। वर्ष 2015-16 में निगम की बसों ने 20.66 करोड़ का घाटा और अनुबंधित बसों ने 46.89 करोड़ रुपये का फायदा दिया। इससे निगम को करीब 26.22 करोड़ रुपये का घाटा हुआ। वहीं 2014-15 में निगम की बसें 52.01 करोड़ रुपये घाटे और अनुबंधित बसों ने 40.05 करोड़ रुपये का फायदा दिया था।

भ्रष्टाचार के क

उप्र राज्य सड़क परिवहन
बेड़े में वर्तमान समय में 954
है, जिसमें 7293 बसें निग
अनुबंधित बसे संचालित हो
की अपनी बसें अनुबंधित ब
से ज्यादा है। बसों में चालक
निगम के होते है। प्रदेश के
इनका संचालन होता है। पुरानी
समय पर हटाकर उसकी जग
लगा दिया जाता है। उसके
भ्रष्टाचार की भेंट चढ़कर हमे
है। जबकि निगम की आय

पर रखे जाने हैं। यह काम भी ... चल रहा है। अब तक साथ ही ट्रैक बिछाने का काम भी चल रहा है। अब तक करीब दो किमी. पटरी बिछाई जा चुकी है।

मिलना जरूरी है। इसकी वजह ट्रेन के ऊपर से मेट्रो रेल का गुजरना है।

सेफ्टी ऑडिट रिपोर्ट को कार्रवाई के लिए मुख्य सचिव को भेजा जा रहा है।

ध्यान केंद्रित करना होगा। वहां किसी भी ... प्रयास से बचने के लिए भी इनको प्रशिक्षित कि...

बच्चों की चोटों के निदान के लिए एमओयू

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। देश में बच्चों की चोट से संबंधित जागरूकता के लिए इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक एंड इंजरीज इनिसिएटिव इन इंडिया (ईएसपीआई इंडिया) अभियान चलाएगी। इसमें बच्चों में होने वाले इंजरी के बाद प्राथमिक उपचार देने वाले चिकित्सकों, मेडिकल कॉलेजों और चिकित्सा संस्थानों के डॉक्टरों को प्रशिक्षित किया जाएगा। बुधवार को इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रॉमेटोलॉजी, एकेडेमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स और इंडो यूएस इमरजेंसी कोलेबरेशन ने मेमोरेंडम ऑफ अंडर स्टैंडिंग (एमओयू) साइन किया गया।

इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रॉमेटोलॉजी के अध्यक्ष प्रो.अजय सिंह ने बताया कि ईएसपीआई इंडिया के गठन का उद्देश्य बाल इमरजेंसी शल्य चिकित्सा का सुदृढ़ीकरण और नई चिकित्सा विशिष्टताओं व एक्यूट केयर सर्जिकल पीडियाट्रिक्स का विकास करना है। इसमें पीडियाट्रिक सर्जरी, पीडियाट्रिक आर्थोपैडिक पीडियाट्रिक न्यूरो सर्जरी, पीडियाट्रिक इमरजेंसी मेडिसिन को शामिल किया गया है। उन्होंने बताया कि भारत में कुल बच्चों की जनसंख्या के 25 से 30 प्रतिशत बच्चे हर साल किसी न किसी इंजरी का शिकार होते हैं। लेकिन इंजरी को लेकर एमबीबीएस में कोई अलग से पाठ्यक्रम नहीं है और न ही ऐसा कोई प्रशिक्षण दिया जाता है। इसीलिए प्रशिक्षण और जानकारी की कमी के कारण बच्चों को सही उपचार नहीं मिल पाता और हर साल सैकड़ों बच्चों की मौत हो जाती है।

साथ आए तीन संगठन, ईएसपीआई इंडिया का शुभारंभ

एमओ पर साइन करते इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रॉमेटोलॉजी, एकेडेमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स और इंडो यूएस इमरजेंसी कोलेबरेशन

एमओयू के माध्यम से इमरजेंसी में रोगी बच्चे की शल्य चिकित्सा को ठीक करने व सुधार करने के लिए एक प्रणाली का विकास करना है। उन्होंने बताया कि इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक्स एवं इंजरी के निदेशक प्रो. डीके गुप्ता, इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलॉजी के अध्यक्ष प्रो. अजय सिंह, एकेडमी कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स इन इंडिया के कोषाध्यक्ष डॉ. संजीव भोई ने एमओयू में हस्ताक्षर किए हैं।

दुर्घटनाग्रस्त बच्चों को इमरजेंसी में मिलेगा विशेष इलाज

■ लखनऊ।

सहारा न्यूज ब्यूरो

दुर्घटना-ग्रस्त बच्चों को वयस्कों से पृथक इलाज की जरूरत होती है, जबकि इमरजेंसी में दुर्घटना-ग्रस्त मरीजों को एक ही प्रकार से ट्रीट किया जाता है। इलाज में तकनीकी त्रुटियों की वजह से बच्चे मर जाते हैं। यह जानकारी बुधवार को इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक राष्ट्रीय कार्यक्रम संचालन को लेकर एम्स के साथ अनुबन्ध के दौरान केजीएमयू के हड्डी रोग विशेषज्ञ प्रो.अजय सिंह ने दी।

ट्रामा सेंटर में सितम्बर से शुरू होगा सर्जिकल पीडियाट्रिक, एम्स के साथ अनुबन्ध

कार्यक्रम संचालन के लिए नेशनल हेल्थ मिशन से बजट की मांग

इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक विषयक कार्यक्रम संचालन का अनुबन्ध, एम्स में पीडियाट्रिक सर्जरी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. डीके गुप्ता, अकादमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स इन इंडिया के कोषाध्यक्ष डा.संजीव और केजीएमयू के प्रो. अजय सिंह के मध्य हुआ। इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रॉमेटोलॉजी के नेशनल प्रेसीडेंट, केजीएमयू के प्रो. अजय सिंह ने बताया कि यह योजना दुर्घटना में घायल बच्चों का विशिष्ट इलाज उपलब्ध कराकर जीवन रक्षा करने वाला है। इसमें बच्चों के इलाज संबन्धित जानकारी के लिए चिकित्सक, नर्स एवं पैरामेडिकल स्टाफ को ट्रेनिंग दी जायेगी। भविष्य में पीडियाट्रिक सर्जरी, न्यूरो सर्जरी, आर्थोपैडिक एवं इमरजेंसी मेडिसिन सुपर स्पेशिलिटी यूनिट शुरू करने की है। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम को एमसीआई और केन्द्र सरकार द्वारा अनुमति मिल चुकी है। इसे बड़े शहरों में नहीं बल्कि ग्रामीण क्षेत्र स्थिति प्राथमिक एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों तक चलाना है। आगामी सितम्बर से केजीएमयू के ट्रामा सेंटर में कार्यक्रम शुरू करने की पृष्ठभूमि तैयार की गई है। योजना संचालित करने के लिए केन्द्र सरकार एवं नेशनल हेल्थ मिशन को बजट मुहैय्या कराने के लिए प्रस्ताव भेजा गया है।

बच्चों की इंजरी के इलाज के लिए प्रशिक्षित किये जाएंगे डॉक्टर

लखनऊ (सं)। आने वाले दिनों में बच्चों की इंजरी के उपचार के लिए चिकित्सक प्रशिक्षित किये जाएंगे जिससे वह उनकी सर्जरी खासे बेहतर ढंग से कर सकें। देश में बच्चों की इंजरी को लेकर जागरूकता जगाने के लिए इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक

चिकित्सकों को प्रशिक्षित करने के लिए एमओयू पर हुए हस्ताक्षर

ट्रामेटोलॉजी, एकेडमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स और इंडो यूएस इमरजेंसी कोलैबरेशन के बीच एक एमओयू साइन हुआ है। ये सोसाइटी बच्चों की इंजरी को लेकर पूरे भारत के मेडिकल कॉलेजों, चिकित्सा संस्थानों में डाक्टरों को ट्रेनिंग के साथ जागरूकता जगाने का काम करेगी।

इसके अलावा देश में पीडियाट्रिक के विकास करने में भी मदद करेंगे। इसके तहत पीडियाट्रिक सर्जरी, पीडियाट्रिक ऑर्थोपेडिक्स, पेडियाट्रिक न्यूरोसर्जरी और पेडियाट्रिक इमरजेंसी मेडिसिन विषयों को लेकर ट्रेनिंग दी जायेगी।

देश में कुल बच्चों की जनसंख्या के 25 से 30 प्रतिशत बच्चे हर वर्ष किसी न किसी इंजरी का शिकार होते हैं। क्योंकि देश में बच्चों की इंजरी को लेकर एमबीबीएस में कोई अलग से पाठ्यक्रम नहीं है और न ही ऐसा कोई कोर्स कराया जाता है जिससे बच्चों की इंजरी के बारे में विस्तार से बताया जाय। ऐसे में जागरूकता और ज्ञान की कमी के कारण बच्चों को सही उपचार नहीं मिल पाता जिससे हर वर्ष सैकड़ों बच्चों की मौत हो जाती है।

क्योंकि बच्चों की शारीरिक बनावट बिलकुल अलग होती है इसलिए इनकी इंजरी होने पर इलाज के तरीके भी अलग हैं। बच्चों की जागरूकता जगाने के लिए इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक्स एवं इंजरी के निदेशक प्रो. डीके गुप्ता जो वर्तमान में एम्स दिल्ली में पीडियाट्रिक विभाग के हेड और केजीएमयू के पूर्व कुलपति हैं, इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलॉजी के अध्यक्ष डॉ. अजय सिंह जो वर्तमान में केजीएमयू के ऑर्थोपेडिक विभाग में प्रोफेसर हैं और एकेडमी कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स इन इंडिया के कोषाध्यक्ष डॉ. संजीव भोई के बीच एक एमओयू साइन हुआ है। इस बारे में इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलॉजी और केजीएमयू के आर्थोपेडिक विभाग के डॉ. अजय सिंह ने बताया कि आकस्मिक कक्ष में रोगी बच्चे की इंजरी के दौरान होने वाली सर्जरी को बेहतर बनाने के ये एमओयू साइन किया गया है। इसके तहत देश भर के चिकित्सा संस्थानों में बच्चों में होने वाली इंजरी के प्रति जागरूकता और ट्रेनिंग दी जायेगी। लक्ष्य है कि कुशल प्राथमिक चिकित्सकों के शिक्षण प्रशिक्षण को बढ़ावा देकर उनके स्वास्थ्य सेवा आपूर्ति प्रणाली में एकीकरण करके पर्यावरण परिवर्तन एवं सुधार के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार लाना है।

इसके तहत बच्चों में होने वाले इंजरी के बाद प्राथमिक उपचार देने वाले चिकित्सकों को ट्रेंड करना है।

दरअसल भारत जैसे देश में प्राथमिक स्तर पर अच्छी देखभाल न हो पाने के कारण तमाम बच्चों की मौत हो जाती है। विशेषज्ञ डाक्टरों की कमी और ज्ञान की कमी भी इसके लिए जिम्मेदार है।

घायल बच्चों के इलाज के लिए हुआ एमओयू

■ एनबीटी, लखनऊ : राजधानी समेत देश भर के घायल बच्चों को बेहतर इलाज देने के लिए इंडियन सोसायटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रॉमाटॉलजी (आईएसपीटी) ऐंड अकेडमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स (एसीईई) ने हाथ मिलाया है। यह जानकारी आईएसपीटी के हेड और केजीएमयू के ऑर्थो डिपार्टमेंट के प्रो. अजय सिंह ने दी। उन्होंने बताया कि दोनों संस्थाओं ने इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक्स ऐंड इंजरी इनीशिएटिव इन इंडिया की पहल भारत में की है। इसके तहत 17 मई को एक एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

इसका उद्देश्य इमरजेंसी में आने वाले बच्चों के लिए एक ऐसी सुविधा का विकास करना है, जहां उन्हें पीडियैट्रिक सर्जरी, पीडियैट्रिक ऑर्थोपैडिक्स, पीडियैट्रिक न्यूरोसर्जरी और पीडियैट्रिक इमरजेंसी मेडिसिन की सभी सुविधाएं एक ही छत की नीचे मिल सकें। एमओयू पर हस्ताक्षर करने वालों में प्रो. देवेंद्र कुमार गुप्ता और डॉ. संजय भोई भी शामिल रहे।

• B.Sc. + M.Sc. (Dual Degree)

AMITY UNIVERSITY
GRADE 'A' ACCREDITED BY NAAC
B.Tech & M.Tech
2016 ADMISSIONS
INDIA'S #1 RANKED ENGG. SCHOOL WITH
OVER 35 UGC RECOGNISED ENGG. DEGREES
• M.Tech

राशि मिलेगी। चन्द्रावल के पूर्व प्रधान राजेन्द्र यादव सहित तमाम ग्रामीणों ने दो किश्तों में अनुदान राशि दिए जाने की मांग की। प्रभारी जिला पंचायत राज अधिकारी उमाशंकर मिश्रा के मुताबिक लाभार्थी को दो किश्तों में अनुदान राशि दिए जाने का नियम है।

मंदिरों के आस-पास घूमते बेसहारा जान को पकड़ने के निर्देश दिए। मंदिरों की जाने वाले प्रत्येक मार्ग की प्रकाश व्यव ठीक कराने तथा अस्थाई प्रकाश व्यवस्था पूर्व की भाँति जनरेटर लगाने के निर्देश प्र मार्ग प्रकाश को दिए।

घायल बच्चों को सही आगे आए आईएस

लखनऊ (डीएनएन)। राजधानी समेत देश भर के घायल बच्चों को बेहतर इलाज देने के लिए इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रॉमेटोलॉजी (आईएसपीटी) एंड अकेडमिक कॉलेज ऑफइमरजेंसी एक्सपर्टस ऑफ इंडिया (एसीईई) ने हाथ मिलाया है। यह जानकारी आईएसपीटी के हेड और केजीएमयू के ऑर्थो विभाग के प्रो. अजय सिंह ने दी।

उन्होंने बताया कि भारत में कुल बच्चों की जनसंख्या के 25 से 30 प्रतिशत बच्चे हर वर्ष किसी न किसी इंजरी का शिकार होते हैं। क्योंकि भारत में बच्चों की इंजरी को लेकर एमबीबीएस में कोई अलग से पाठ्यक्रम नहीं है और न ही ऐसा कोई कोर्स कराया जाता है, जिससे बच्चों की इंजरी के बारे में विस्तार से

- **जागरुकता लाने के लिए एमओयू हुआ साइन**

बताया जाए। ऐसे में जागरूकता और ज्ञान की कमी के कारण बच्चों को सही उपचार नहीं मिल पाता, जिससे हर वर्ष सैकड़ों बच्चों की मौत हो जाती है। क्योंकि बच्चों की शारीरिक बनावट बिलकुल अलग होती है इसलिए इनको इंजरी होने पर इलाज के तरीके भी अलग हैं। भारत में बच्चों की इंजरी को लेकर जागरूकता जगाने के लिए यह एमओयू

ब्रिटेश काल से चली आ रही रेलवे कैश चेस्ट व्यवस्था खत्म

से इलेक्ट्रिक इंजन तक पहुंच गया हो लेकिन उसके छोटे स्टेशनों से पैसा कलेक्ट करने का तरीका नहीं बदला। अब भी कई मंडलों में छोटे स्टेशनों से पैसा टीसी सेफ यानी कैश चेस्ट के जरिए बड़े स्टेशन तक पहुंचाया जाता है। वहां से उस पैसे को बैंक में जमा किया जाता है। ढाई कुंतल के एक कैश वैन को ट्रेन के अंदर रखने में भी रेलवे को काफी मशक्कत करनी पड़ती थी।

था। अब स्टेशनों पर होने वाली आय को उसी दिन में बैंक में जमा किया जा सकेगा। इससे रेलवे को ब्याज अधिक मिलेगा। साथ ही कैश पहुंचाने और ट्रेन में चेस्ट रखवाने में भी कई कर्मचारियों की ड्यूटी लगानी पड़ती थी। ऐसे में इन कर्मचारियों को भी दूसरे कामों में लगाया जा सकेगा।

डॉक्टरों के प्रशिक्षण के लिए एमओयू साइन

लखनऊ | कार्यालय संवाददाता

भारत में प्रतिवर्ष लाखों बच्चे किसी न किसी इंजरी का शिकार होते हैं। जागरुकता व सही ज्ञान न होने से बच्चों को सही इलाज नहीं मिलता है। जिससे उनकी मौत हो जाती है।

बच्चों की इंजरी को कम करने के लिए एमबीबीएस कर चुके युवा डॉक्टरों को प्रशिक्षित करने की जरुरत है। इसलिए ही इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रॉमेटोलॉजी, एकेडमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स और इंडो यूएस इमरजेंसी कोलेब्रेशन के बीच एक एमओयू साइन हुआ है। यह सोसाइटी बच्चों की इंजरी को लेकर पूरे भारत के मेडिकल कॉलेजों, चिकित्सा संस्थानों में डॉक्टरों को ट्रेनिंग देगी, जिससे बच्चों के इंजरी को समय पर बेहतर इलाज मिले।

इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रॉमेटोलॉजी, एकेडमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स और इंडो यूएस इमरजेंसी कोलेब्रेशन के बीच एक एमओयू साइन हुआ है

इनकी होगी महत्वपूर्ण भूमिका

बच्चों की इंजरी से जुड़े पाठ्यक्रम व ट्रेनिंग को शुरू करवाने में इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रॉमेटोलॉजी के अध्यक्ष डॉ. अजय सिंह (केजीएमयू के ऑर्थोपेडिक विभाग में प्रोफेसर), इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक्स एवं इंजरी के निदेशक प्रो. डीके गुप्ता (वर्तमान में एम्स दिल्ली में पीडियाट्रिक विभाग के विभागाध्यक्ष), एकेडमी कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स इन इंडिया के कोषाध्यक्ष डॉ. संजीव भोई की भूमिका अहम है।

चिकित्सा संस्थानों में देंगे प्रशिक्षण

इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रॉमेटोलॉजी और केजीएमयू के आर्थोपेडिक विभाग के डॉ. अजय सिंह ने बताया कि आकस्मिक कक्ष में बच्चों की इंजरी के दौरान होने वाली सर्जरी को बेहतर बनाने के लिए यह अहम एमओयू साइन किया गया है। इसके तहत चिकित्सा संस्थानों में बच्चों में होने वाली इंजरी के प्रति जागरुक किया जाएगा। इसका लक्ष्य कुशल प्राथमिक चिकित्सकों के शिक्षण को बढ़ावा देना, स्वास्थ्य सेवा आपूर्ति प्रणाली में एकीकरण करके पर्यावरण परिवर्तन एवं सुधार के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार लाना है। इसमें बच्चों में होने वाले इंजरी के बाद प्राथमिक उपचार देने वाले चिकित्सकों को ट्रेंड करना है।

बच्चों की इंजरी के लिए एमओयू साइन

लखनऊ। भारत में प्रतिवर्ष बड़े पैमाने पर बच्चे हादसों और इंजरी का शिकार हो रहे है और बच्चों की इंजरी को लेकर पूरे एमबीबीएस में कोई अलग से पाठ्यक्रम नहीं है और न ही उसका प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे बच्चों की इंजरी के बारे में विस्तार रूप से बताया जा सके। ऐसी स्थिति में बच्चों को जागरूक करना और उन्हें इसके बारे में ज्ञान देने की बड़ी आवश्यकता है। जिसकी कमी के कारण बच्चों को सही उपचार नहीं मिल पाता है और हर वर्ष सैकड़ों बच्चों की मौत हो जाती है। बच्चे और बड़ों के शरीर ही काफी अंतर होते है। जिसके लिए उनका इलाज भी बड़ों के इलाज से काफी अलग होता है। जिनकी की इंजरी को लेकर जागरूकता जगाने के लिए इंडियन सोसाइटी आफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलजी, एकेडमिक कालेज आफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स और इंडो यूएस इमरजेंसी कोलैबरेशन के बीच एक एमओयू साइन हुआ है।

ये सोसाइटी बच्चों की इंजरी को लेकर पूरे भारत के मेडिकल कालेजों, चिकित्सा संस्थानों में डाक्टरों को ट्रेनिंग के साथ जागरूकता जगाने का काम करेंगी। इसके अलावा भारत में पीडियाट्रिक का विकास करने में मदद करेंगी। इसके तहत पीडियाट्रिक सर्जरी, पीडियाट्रिक आर्थोपेडिक्स, पीडियाट्रिक न्यूरोसर्जरी और पीडियाट्रिक इमर्जेंसी मेडिसिन विषयों को लेकर ट्रेनिंग दी जायेगी। बच्चों की जागरूकता जगाने के लिए इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक्स एवं इंजरी के निदेशक प्रो. डीके गुप्ता जो वर्तमान में एम्स दिल्ली में पीडियाट्रिक विभाग के हेड और केजीएमयू के पूर्व कुलपति हैं, इंडियन सोसाइटी आफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलाजी के अध्यक्ष डा. अजय सिंह जो वर्तमान में केजीएमयू के आर्थोपेडिक विभाग में प्रोफेसर हैं और एकेडमी कालेज आफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स इन इंडिया के कोषाध्यक्ष डा. संजीव भोई के बीच एक एमओयू साइन हुआ है। इस बारे में इंडियन सोसाइटी आफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलाजी और केजीएमयू के आर्थोपेडिक विभाग के डा. अजय सिंह ने बताया कि आकस्मिक कक्ष में रोगी बच्चे की इंजरी के दौरान होने वाली सर्जरी को बेहतर बनाने के ये एमओयू साइन किया गया है। जिससे देश भर के चिकित्सा संस्थानों में बच्चों में होने वाली इंजरी के प्रति जागरूकता और ट्रेनिंग दी जायेगी। जिसका लक्ष्य है कि कुशल प्राथमिक चिकित्सकों के शिक्षण प्रशिक्षण को बढ़ावा देकर उनके स्वास्थ्य सेवा आपूर्ति प्रणाली में एकीकरण करके पर्यावरण परिवर्तन एवं सुधार के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार लाना है। जिससे बच्चों को इंजरी से बचाया जा सके।

बच्चों की इंजरी रोकने के लिये एसीई.आईएसपीटी. ने मिलाया हाथ

लखनऊ, बुधवार। सड़क दुर्घटनाओं में बच्चों को होने वाली इंजरी से बच्चों को कवर सुरक्षा देने के लिए एकेडमिक कॉलेज ऑफ इमर्जेंसी और इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रामेलॉजी अब एक मंच पर आ गए हैं। दोनों ने मिलकर इमर्जेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक्स एंड इन्ज्यूरी इनिशियेटिव इन इंडिया नाम से नया फोरम तैयार किया है। यह फोरम इमर्जेंसी पीडियाट्रिक्स एंड इंजरी की पहल पर बना है। ईएसपीआई.इंडिया बच्चों की शल्य चिकित्सा को लेकर एक्यूट केयर सर्जिकल पीडियाट्रिक्स को बढ़ाने की दिशा में अपना योगदान देगा।आईएसपीटी के अध्यक्ष व किंग जार्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी के ट्रामा सेंटर के कोआर्डिनेटर डॉ अजय सिंह के मुताबिक भारत में कुल बच्चों की जनसंख्या के 25 से 30 फीसदी बच्चे हर साल किसी न किसी इंजरी का शिकार होते हैं। भारत में बच्चों की इंजरी को लेकर एमबीबीएस में कोई अलग से पाठ्यक्रम नहीं है और न ही ऐसा कोई कोर्स कराया जाता है जिसमें

ई.एस.पी.आई. इंडिया बच्चों की शल्य चिकित्सा पर करेगा काम

बच्चों की इंजरी के बारे में विस्तार से बताया जाए। जागरुकता के अभाव में सही उपचार न मिल पाने से हर साल सैकड़ों बच्चों की मौत हो जाती है। उन्होंने बताया कि बच्चों की शारीरिक बनावट बिलकुल अलग होती है इसलिए इनकी इंजरी होने पर इलाज के तरीके भी अलग हैं। उन्होंने बताया कि ईएसपीआई.इंडिया देश में स्थापित मेडिकल कालेजों सहित सभी चिकित्सा संस्थानों के फैकल्टी मेम्बर व डाक्टर्स को ट्रेनिंग देगा। इसके अलावा पीडियाट्रिक्स के तहत आने वाली विभिन्न यूनिट जैसे पीडियाट्रिक सर्जरी पीडियाट्रिक ऑर्थोपेडिक्स पीडियाट्रिक न्यूरोसर्जरी और पीडियाट्रिक इमर्जेंसी मेडिसिन के सलेबस में भी सुधार किया जाएगा। एसीई व आईएसपीटी के बीच यह एमओयू एसीपीआई के एकेडमिक डॉयरेक्टर डॉ डीके गुप्ता के निर्देशन में किया गया है। डॉ डीके गुप्ता केजीएमयू के कुलपति भी रह चुके हैं। एकेडमिक ट्रांसलेशनल इनोवेशन सामुदायिक कौशल विकास ;जन स्वास्थ्य चिकित्सा कौशल विकास एवं प्रशिक्षण स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ाना और इमर्जेंसी ट्रीटमेंट के लिए मानक तैयार करना।

निकलता देखा। देखते ही देखते मिशन का कार्यालय आग के आगोश में समा गया। खबर मिलने पर मिशन के कार्यालय में तैनात अधिकारी व कर्मचारी आनन-फानन में मौके पर आ पहुंचे। आग बुझाने के लिए फायर ब्रिगेड को बुलाया गया। दमकलकर्मियों के कठिन प्रयासों के बाद दोपहर साढ़े बारह बजे आग पर पूरी तरह से काबू पाया जा सका। इस घटना में कार्यालय में रखी तमाम फाइलें, टीवी, सोफा, पंखे व फ्रिज स्वाहा हो गये। इसके अतिरिक्त कितनी फाइलें स्वाहा व क्या-क्या सामान स्वाहा हुआ है। इसका पता लगाने में सारे

दुर्घटनाग्रस्त बच्चों को इमरजेंसी में मिलेगा विशेष इलाज

■ लखनऊ।

सहारा न्यूज ब्यूरो

दुर्घटना-ग्रस्त बच्चों को वयस्कों से पृथक इलाज की जरूरत होती है, जबकि इमरजेंसी में दुर्घटना-ग्रस्त मरीजों को एक ही प्रकार से ट्रीट किया जाता है। इलाज में तकनीकी त्रुटियों की वजह से बच्चे मर जाते हैं। यह जानकारी बुधवार को इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक राष्ट्रीय कार्यक्रम संचालन को लेकर एम्स के साथ अनुबन्ध के दौरान केजीएमयू के हड्डी रोग विशेषज्ञ प्रो.अजय सिंह ने दी।

ट्रामा सेंटर में सितम्बर से शुरू होगा सर्जिकल पीडियाट्रिक, एम्स के साथ अनुबन्ध

कार्यक्रम संचालन के लिए नेशनल हेल्थ मिशन से बजट की मांग

इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक विषयक कार्यक्रम संचालन का अनुबन्ध, एम्स में पीडियाट्रिक सर्जरी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. डीके गुप्ता, अकादमिक कॉलेज ऑफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स इन इंडिया के कोषाध्यक्ष डा.संजीव और केजीएमयू के प्रो. अजय सिंह के मध्य हुआ। इंडियन सोसाइटी ऑफ पीडियाट्रिक ट्रॉमेटोलॉजी के नेशनल प्रेसीडेंट, केजीएमयू के प्रो. अजय सिंह ने बताया कि यह योजना दुर्घटना में घायल बच्चों का विशिष्ट इलाज उपलब्ध कराकर जीवन रक्षा करने वाला है। इसमें बच्चों के इलाज संबन्धित जानकारी के लिए चिकित्सक, नर्स एवं पैरामेडिकल स्टाफ को ट्रेनिंग दी जायेगी। भविष्य में पीडियाट्रिक सर्जरी, न्यूरो सर्जरी, आर्थोपैडिक एवं इमरजेंसी मेडिसिन ग्रुप [illegible] करने की है। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम को एमसीआई और केन्द्र सरकार द्वारा अनुमति मिल चुकी है। इसे बड़े शहरों में नहीं बल्कि ग्रामीण क्षेत्र स्थित प्राथमिक एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों तक चलाना है। आगामी सितम्बर से केजीएमयू के ट्रामा सेंटर में कार्यक्रम शुरू करने की पृष्ठभूमि तैयार की गई है। योजना संचालित करने के लिए केन्द्र सरकार एवं नेशनल हेल्थ मिशन को बजट मुहैय्या कराने के लिए प्रस्ताव भेजा गया है।

मेट्रो रेल चला...

महिलाओं ...

लखनऊ (एसएन...) चलाने के लिए 21 ... भर्ती की गई है। ...

कुल 79

...र रही कार्यपरिषद की बैठक

बच्चों की इंजरी के लिए एमओयू साइन

लखनऊ। भारत मे प्रतिवर्ष बड़े पैमाने पर बच्चे हादसों और इंजरी का शिकार हो रहे है और बच्चों की इंजरी को लेकर पूरे एमबीबीएस मे कोई अलग से पाठ्यक्रम नही है और न ही उसका प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे बच्चो की इंजरी के बारे मे विस्तार रूप से बताया जा सके। ऐसी स्थिति मे बच्चों को जागरूक करना और उन्हें इसके बारे में ज्ञान देने की बड़ी आवश्यकता है। जिसकी कमी के कारण बच्चो को सही उपचार नहीं मिल पाता है और हर वर्ष सैकड़ों बच्चो की मौत हो जाती है। बच्चे और बड़ो के शारीर हो काफी अंतर होते है। जिसके लिए उनका इलाज भी बड़ो के इलाज से काफी अलग होता है। जिनकी की इंजरी को लेकर जागरूकता जगाने के लिए इंडियन सोसाइटी आफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलजी, एकेडमिक कालेज आफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स और इंडो यूएस इमरजेंसी कोलैबरेशन के बीच एक एमओयू साइन हुआ है।

ये सोसाइटी बच्चों की इंजरी को लेकर पूरे भारत के मेडिकल कालेजों, चिकित्सा संस्थानों मे डाक्टरों को ट्रेनिंग के साथ जागरूकता जगाने का काम करेंगे। इसके अलावा भारत मे पीडियाट्रिक का विकास करने में मदद करेंगे। इसके

तहत पीडियाट्रिक सर्जरी, पीडियाट्रिक आर्थोपेडिक्स, पीडियाट्रिक न्यूरोसर्जरी और पीडियाट्रिक इमर्जेंसी मेडिसिन विषयों को लेकर ट्रेनिंग दी जायेगी। बच्चों की जागरूकता जगाने के लिए इमरजेंसी सर्जिकल पीडियाट्रिक्स एवं इंजरी के निदेशक प्रो. डीके गुप्ता जो वर्तमान मे एम्स दिल्ली में पीडियाट्रिक विभाग के हेड और केजीएमयू के पूर्व कुलपति है, इंडियन सोसाइटी आफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलाजी के अध्यक्ष डा. अजय सिंह जो वर्तमान मे केजीएमयू के आर्थोपेडिक विभाग मे प्रोफेसर है और एकेडमी कालेज आफ इमरजेंसी एक्सपर्ट्स इन इंडिया के कोषाध्यक्ष डा. संजीव भोई के बीच एक एमओयू साइन हुआ है। इस बारे मे इंडियन सोसाइटी आफ पीडियाट्रिक ट्रामेटोलाजी और केजीएमयू के आर्थोपेडिक विभाग के डा. अजय सिंह ने बताया कि आकस्मिक कक्ष मे रोगी बच्चे की इंजरी के दौरान होने वाली सर्जरी को बेहतर बनाने के ये एमओयू साइन किया गया है। जिससे देश भर के चिकित्सा संस्थानो मे बच्चो मे होने वाली इंजरी के प्रति जागरूकता और ट्रेनिंग दी जायेगी। जिसका लक्ष्य है कि कुशल प्राथमिक चिकित्सको के शिक्षण प्रशिक्षण को बढ़ावा देकर उनके स्वास्थ्य सेवा आपूर्ति प्रणाली मे एकीकरण करके पर्यावरण परिवर्तन एवं सुधार के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाओं मे सुधार लाना है। जिससे बच्चों को इंजरी से बचाया जा सके।